# मिशन शिक्षण संवाद

# प्रेरक व्यक्तित्वों की अमर कहानी

ऐसे महामानव वसुधा पर, अमिट पद चिह्न बनाते हैं।
मानवता का दीप जलाकर, अमर सदा हो जाते हैं।।

<u>संकलनकर्ता</u> :
अजय सिंह, स० अ०,
प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, सीतापुर (उ०प्र०)

<u>रूपरेखांकन</u> :
सौरभ शुक्ला, स० अ०,
प्रा० वि० पिपरिया, भोजीपुरा, बरेली (उ०प्र०)


## अपनी बात

बच्चों के द्वारा प्रारम्भिक जीवन में सीखे व आत्मसात किए गए संस्कार आजीवन स्थायी रूप से साथ में रहते हैं, जिससे बच्चे के सशक्त व सांस्कारिक व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

हम शिक्षकों का मूल धर्म है कि बच्चों का सर्वांगीण विकास करते हुए संस्कारयुक्त व्यक्तित्व को बच्चों में विकसित करें। इसी उद्देश्य से कुछ प्रेरक व्यक्तित्वों की संक्षिप्त जीवनी का संकलन किया गया है। इसके साथ ही बच्चे अच्छे विचारों को अपने जीवन में उतार कर राष्ट्र के सच्चे व अच्छे नागरिक बन सकेंगे। जिससे हम स्वर्णिम व सशक्त भारत के सपने को साकार कर सकेंगे। शुभकामनाएँ!

# स्वामी विवेकानन्द

# स्वामी विवेकानंद

**अनमोल वचन- "उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।"**

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी सन 1863 को कलकत्ता में हुआ। इनका घर का नाम नरेन्द्र दत्त था। इनकी माता भुवनेश्वरी देवी इन्हें बचपन में 'विले' कहकर पुकारती थी। इनके पिता विश्वनाथदत्त पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे। सन 1884 में विश्वनाथदत्त की मृत्यु हो गयी। घर का भार नरेन्द्र पर पड़ा, घर की दशा बहुत खराब थी। अत्यंत गरीबी में भी नरेन्द्र बड़े अतिथि सेवी थे, स्वयं भूखे रहकर अतिथि को भोजन कराते, स्वयं बाहर वर्षा में रात भर भीगते - ठिठरते पड़े रहते और अतिथि को अपने बिस्तर पर सुला देते।

स्वामी रामकृष्ण की प्रशंसा सुनकर नरेन्द्र उनके पास पहले तो तर्क करने के विचार से गए थे, किंतु परमहंस जी ने देखते ही पहचान लिया कि ये तो वही शिष्य है, जिसका उन्हें कई दिनों से इंतजार है। परमहंस जी की कृपा से इनको आत्म साक्षात्कार हुआ, फलस्वरूप नरेन्द्र परमहंस जी के शिष्यों में प्रमुख हो गए। सन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानन्द हुआ।

मिशन शिक्षण संवाद

25 वर्ष की अवस्था में नरेन्द्र दत्त ने गेरुआ वस्त्र पहन लिया, तत्पश्चात उन्होंने पैदल ही पूरे भारत वर्ष की यात्रा की।

11 सितम्बर 1893 में शिकागो (अमेरिका) में विश्वधर्म परिषद हो रही थी ।स्वामी विवेकानन्द जी उसमें भारत के प्रतिनिधि के रूप में पहुँचे। यूरोप-अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को हीन दृष्टि से देखते थे। वहाँ लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानन्द को सर्व धर्म परिषद में बोलने का समय ही न मिले। एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला किंतु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए। फिर तो अमेरिका में उनका बहुत स्वागत हुआ।

4 जुलाई सन 1902 को इस महामानव ने देहत्याग दिया।

मिशन शिक्षण संवाद

*संकलनकर्ता :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

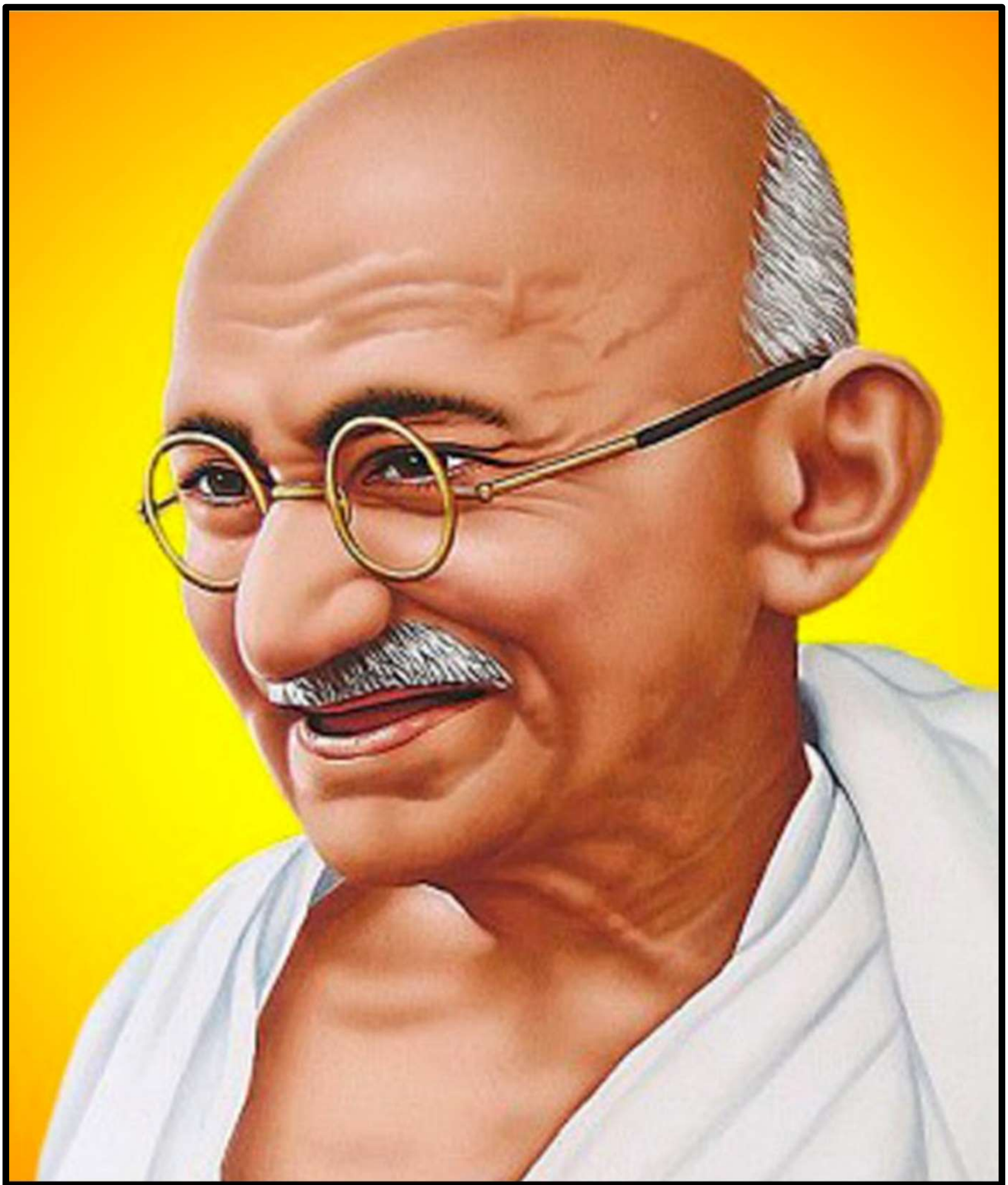

# महात्मा गाँधी

# महात्मा गांधी

**अनमोल वचन- "मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है,सत्य मेरा भगवान है और उसे अहिंसा उसे पाने का साधन।"**

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई० को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था ।इनके पिता का नाम करमचन्द्र गांधी और माता का नाम पुतलीबाई था ।इनके पिता ब्रिटिश राज के समय काठियावाड़ की एक छोटी रियासत के दीवान थे। गांधी जी का पूरा नाम - 'मोहनदास करम चन्द्र गांधी था ।जब गांधी जी मात्र 13 वर्ष के थे तब इनका विवाह पोरबंदर के एक व्यापारी की पुत्री कस्तूरबा से कर दिया गया।

गांधी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर से पूरी की थी। गांधी जी कानून की पढ़ाई पूरी करने और बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैंड चले गए। गांधी जी अपने जीवन के 21 साल दक्षिण अफ्रीका में बिताए ।

एक बार ट्रेन में प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इन्कार करने के बाद गांधी जी को ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया। इस घटना से गांधी जी के जीवन में एक गहरा मोड़

आया और गांधी जी वर्ष 1914 में भारत वापस आये इस समय तक गांधी जी एक राष्ट्रवादी नेता और संयोजक के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे।

भारत आकर गांधी जी ने कई आंदोलन जैसे असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन सत्याग्रह चलाया। 1922 में गांधी जी पर राष्ट्र द्रोह का मुकदमा चलाया गया और 6 वर्ष की सजा सुनाई गई थी खराब स्वास्थ्य के कारण फरवरी 1924 में रिहा कर दिया गया।

भारत छोड़ो आंदोलन के तहत गांधी जी को 9 अगस्त 1942 ई० को गिरफ्तार कर लिया गया तथा गांधी जी को पुणे के आगा खां महल में दो साल तक बंदी बनाकर रखा गया।

30 जनवरी 1948 को बिरला हाउस में नाथूराम गोंडसे द्वारा गोली मारकर राष्ट्र पिता गांधी जी की हत्या कर दी गयी।

गांधी जी का स्मारक स्थल 'राज घाट' नई दिल्ली में है।

*संकलनकर्ता :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

मिशन शिक्षण संवाद

डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकर

# डॉ0 भीमराव राम जी आम्बेडकर

**अनमोल कथन-"मैं समाज की प्रगति का मानक उसमें रहने वाली महिलाओं की प्रगति को मानता हूँ।"**

डॉक्टर भीमराव राम जी आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के एक छोटे से गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम राम जी मालो जी सकपाल व माता का नाम भीमाबाई था। अपने माता -पिता की चौदहवीं सन्तान के रूप में जन्में डॉक्टर भीमराव आम्बेडकर जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न थे।

आम्बेडकर जी का जन्म महार जाति में हुआ था जिसे लोग अछूत और बेहद निचला वर्ग मानते थे ।बचपन में भीमराव आम्बेडकर के परिवार के साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था।

आम्बेडकर के पूर्वज लंबे समय तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में कार्य करते थे और इनके पिता ब्रिटिश भारतीय सेना की मऊ छावनी सेवा में थे। भीमराव के पिता हमेशा ही अपने बच्चों की शिक्षा पर जोर देते थे।

मिशन शिक्षण संवाद

1894 में भीमराव आम्बेडकर जी के पिता सेवानिवृत्त हो गए और इसके दो साल बाद आम्बेडकर की माँ की मृत्यु हो गयी। राम जी सकपाल के केवल तीन बेटे बलराम, आनंदराव और भीमराव और दो बेटियाँ मंजुला और तुलसा ही इन कठिन हालातों में बच पाए। अपने भाइयों और बहनों में केवल आम्बेडकर ही स्कूल की परीक्षा में सफल हुए।

अपने विवादास्पद विचारों और गांधी जी और कांग्रेस की कटु आलोचना के बावजूद भी आम्बेडकर की प्रतिष्ठा विद्वान और विधिवेत्ता की थी। जिसके कारण 15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार अस्तित्व में आयी, तो उसने आम्बेडकर को देश के पहले कानून मंत्री के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। 29 अगस्त 1947 को आम्बेडकर को संविधान की रचना के लिए बनी संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया।

14 अक्टूबर 1956 को आम्बेडकर जी ने एक बौद्ध भिक्षु से पारम्परिक तरीके से बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। 6 दिसम्बर 1956 को आम्बेडकर जी का निधन हो गया।

*<u>संकलनकर्ता</u> :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

मिशन शिक्षण संवाद

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

# डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

**अनमोल वचन- "किताबें पढ़ने से हमें एकांत में विचार करने की आदत और सच्ची खुशी मिलती है।"**

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को तमिलनाडु के छोटे से गाँव तिरुमनी में ब्राहमण परिवार में हुआ था । पिता सर्वपल्ली वीरास्वामी गरीब थे पर एक विद्वान ब्राहमण थे।डॉ०राधाकृष्णन शुरू से ही एक मेधावी छात्र थे उन्होंने दर्शन शास्त्र एम०ए० किया था ।

1916 में मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में दर्शन शास्त्र के सहायक प्राध्यापक बने, तत्पश्चात वे इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में भारतीय दर्शन शास्त्र के शिक्षक बने बाद में बनारस विश्व विद्यालय में उपकुलपति बन गए ।डॉ०राधाकृष्णन, स्वामी विवेकानन्द और वीर सावरकर को अपना आदर्श मानते थे। अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से उन्होंने समूचे विश्व को भारतीय दर्शनशास्त्र से परिचित कराने का प्रयास किया।

13 मई 1952 से 13 मई 1962 तक वे देश के उपराष्ट्रपति (भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति) थे, 13 मई 1962 को ही वे देश के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

शिक्षा और राजनीति में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए राधाकृष्णन को सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न'से सम्मानित किया गया ।

17 अप्रैल 1975 को एक लंबी बीमारी के बाद डॉ० राधाकृष्णन का निधन हो गया। प्रति वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाकर राधाकृष्णन जी के प्रति सम्मान व्यक्त किया जाता है।

डॉ० राधा कृष्णन ने अपने जीवन के 40 वर्ष एक शिक्षक के रुप में बिताए ।शिक्षा के क्षेत्र में एक आदर्श शिक्षक के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।

मिशन शिक्षण संवाद

*संकलनकर्ता :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

# अरुणिमा सिन्हा

# अरुणिमा सिन्हा

**अनमोल कथन-"अगर इंसान सच्चे दिल से चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकता चाहे वह औरत हो या आदमी या दिव्यांग।"**

अरुणिमा सिन्हा का जन्म उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर जिले में 20 जुलाई 1988 को हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उत्तरप्रदेश से ही पूरी हुई,इसके बाद नेहरू इंस्टीटूट ऑफ माउंटेनियरिंग उत्तर काशी से माउंटेनियरिंग कोर्स किया था हालांकि इनको पढ़ाई लिखाई से ज्यादा खेलकूद में रुचि थी। इन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर वॉलीबाल भी खेला हालांकि वॉलीबॉल व फुटबाल दोनो की अच्छी खिलाड़ी थी।

अरुणिमा के पिता सेना में इंजीनियर थे, लेकिन जब अरुणिमा 3 साल की थी तभी इनके पिता ने इस दुनिया को छोड़ दिया। वहीं इनकी माँ भारत के हेल्थ डिपार्टमेंट में सुपरवाईजर थी।

अरुणिमा ने खेलते समय ही नौकरी करनी चाही और सी0आई0एस0एफ0 की एक पोस्ट के लिए आवेदन किया।सी0आई0एस0एफ0 की परीक्षा में शामिल होने के लिए 21 अप्रैल 2011 को अरुणिमा लखनऊ से दिल्ली जाने वाली पद्मावती एक्सप्रेस से अपना सफर शुरू किया ।

मिशन शिक्षण संवाद

ट्रेन में सफर के दौरान कुछ बदमाशों ने इनसे सोने की चेन एवं बैग छुड़ाने की कोशिश की, जब अरुणिमा ने इन बदमाशों का विरोध किया तो बदमाशों ने अरुणिमा को चलती ट्रेन से नीचे फेंक दिया ।

अरुणिमा जब नीचे गिरी तो इन्होंने देखा कि दूसरे ट्रैक पर भी एक ट्रेन आ रही है, लेकिन जब तक अरुणिमा खुद को पटरी से हटा पाती ट्रेन इनके पैर को कुचलते हुए आगे बढ़ी। अरुणिमा के अनुसार, इसके बाद कि घटना उनको याद नहीं है। लोगों द्वारा बताया गया, कि ये हादसा रात में हुआ था और इनके पैर के ऊपर से लगभग 49 ट्रेन निकल चुकी थी।

उसके बाद इन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहाँ डॉक्टर ने इनकी जान बचाने के लिए एक पैर काट दिया, जिससे अरुणिमा की जिंदगी तो बच गई लेकिन इन्हें एक पैर गंवाना पड़ा। यह एक खिलाड़ी के लिए दुनिया के सबसे बड़े सदमे से कम नही आंका जा सकता।

जब अरुणिमा अस्पताल में थी, तो इन्होंने कुछ नया कर दिखाने का फैसला किया और वह था ऊँचे-ऊँचे पर्वतों पर अपने देश का झण्डा लहराना।

अस्पताल से निकलने के बाद अरुणिमा भारत की पहली बार माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली महिला बछेंद्री पाल से मिली और

मिशन शिक्षण संवाद

फिर प्रशिक्षण के बाद अरुणिमा दुनिया की उच्चतम चोटी माउंट एवरेस्ट चोटी की चढ़ाई 21 मई 2013 को पूरी की, उस समय अरुणिमा की उम्र मात्र 26 वर्ष की थी।

इस प्रकार से अरुणिमा माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली भारत की प्रथम दिव्यांग महिला का गौरव हासिल कर सारी दुनिया के लिए प्रेरणा स्रोत बन गयी।

अरुणिमा को भारत सरकार की तरफ से 2015 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जो कि भारत का चौथा सबसे बड़ा सम्मान है।

अपनी जिन्दगी की कठिनाइयों में किए गए संघर्ष को अरुणिमा ने एक किताब के जरिए व्यक्त किया है, जिसका नाम 'बोर्न अगेन आन द माउंटेन' है। इस किताब को हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी जी ने 2014 में लांच किया।

पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा स्रोत बन चुकी अरुणिमा सिन्हा के जज्बे व दृढ़ संकल्प को सलाम!

*संकलनकर्ता :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

# सावित्री बाई फुले

# सावित्री बाई फुले

**अनमोल वचन-"अब बिल्कुल भी खाली मत बैठो, जाओ शिक्षा प्राप्त करो।"**

भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को नायगाँव ,जिला सतारा (महाराष्ट्र) में हुआ ।इनके पिता जी का नाम खंडोजीराव नेवसे पाटिल था और माता का नाम लक्ष्मीबाई था। बाल विवाह प्रथा के अनुसार इनका विवाह सन1840 में 9 वर्ष की उम्र ज्योतिबा फुले के साथ हुआ, उस समय ज्योतिबा जी की उम्र 13 वर्ष की थी।

1841 में ज्योतिबा जी की प्रेरणा से सावित्रीबाई की शिक्षा की शुरुवात हुई। उस समय लड़कियों की दशा अत्यंत दयनीय थी और उन्हें पढ़ने लिखने की अनुमति तक नहीं थी, इस रीति को तोड़ने के लिए ज्योतिबा और सावित्रीबाई ने 1 जनवरी 1848 को पुणे में बालिकाओं केलिए एक विद्यालय की स्थापना की ।यह भारत में बालिकाओं के लिए खुलने वाला पहला बालिका विद्यालय था ।

इस विद्यालय में पहली महिला शिक्षिका व पहली मुख्याध्यापिका सावित्रीबाई फुले की नियुक्ति हुई। इस प्रकार भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले बनीं।

इस पाठशाला में पहले ही दिन 6 बालिकाओं ने प्रवेश लिया । पुणे में लोगों ने फुले जी के इस कार्यक्रम में मदद करने के बजाय उनकी बहुत निंदा व आलोचना की। ज्योतिबा के पिता गोविंदराव ने रूढ़िवादी लोगों के प्रभाव में आकर अपने पुत्र ज्योतिबा व सावित्रीबाई को घर से बाहर निकाल दिया, लेकिन सावित्रीबाई ने इस कठिन समय में भी हिम्मत से काम लेकर ज्योतिबा फुले के इस समाज कार्य में बराबर का साथ दिया।

सावित्री बाई ने अपने जीवन को एक मिशन की तरह से जिया जिसका उद्देश्य था विधवा विवाह करवाना, छुआछूत मिटाना, बालिकाओं को शिक्षित करना ।

इस तरह से समाज सेवा करते-करते प्लेग के छूत से प्रभावित बच्चे की सेवा करने से प्लेग के कारण 10 मार्च 1897 को सावित्रीबाई फुले का निधन हो गया।

*संकलनकर्ता :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

मिशन शिक्षण संवाद

# सरदार वल्लभ भाई पटेल

# सरदार वल्लभभाई पटेल

**अनमोल वचन- "कठिन समय में कायर बहाना ढूँढते हैं तो वहीं बहादुर व्यक्ति रास्ता खोजते हैं।"**

वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को नडियाद गुजरात में एक लेवा गुर्जर प्रतिहार कृषक परिवार में हुआ था ।ये झबेर भाई पटेल एवं लाडवा देवी की चौथी सन्तान थे। इनकी शिक्षा मुख्यतः स्वाध्याय से हुई। लंदन जाकर इन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे ।महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर इन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया।

भारत की आजादी के बाद पटेल जी भारत के प्रथम गृहमंत्री व उप-प्रधानमंत्री बने। बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे पटेल को सत्याग्रह की सफलता पर वहाँ की महिलाओं ने सरदार की उपाधि प्रदान की ।

पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हें स्वयत्तता देना सम्भव नही होगा, इसके परिणाम स्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी रजवाड़ों  ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

केवल जम्मू एवं कश्मीर,जूनागढ़ तथा हैदराबाद के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जब बहुत विरोध हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया, किन्तु नेहरू ने कश्मीर को अंतर्राष्ट्रीय समस्या कहकर अपने पास रख लिया।

आजादी के बाद विभिन्न रियासतों में बिखरे भारत के भू-राजनीतिक एकीकरण में केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए पटेल को बिस्मार्क और लौह पुरुष भी कहा जाता है।

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का निधन 15 दिसम्बर 1950 को हुआ लेकिन आज भी पटेल जी का जीवन दर्शन हम भारतीयों को प्रेरणा प्रदान करता है।

*<u>संकलनकर्ता</u> :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

मिशन शिक्षण संवाद

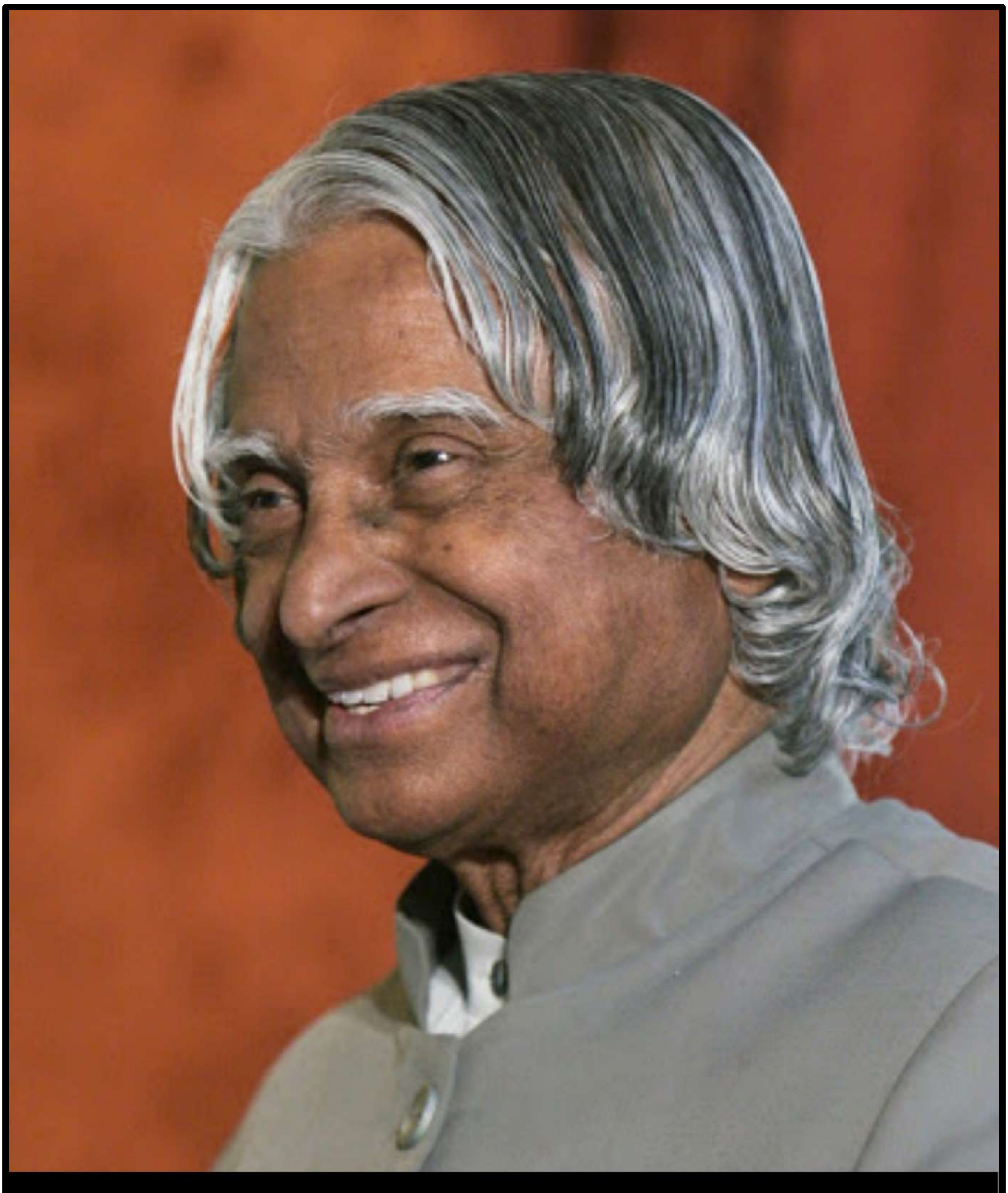

# डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

# डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम

**अनमोल वचन- "सपने वो नहीं जो हम नींद में देखते हैं, असली सपने वो होते हैं जो हमें सोने नहीं देते।"**

कलाम जी का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को धनुष्कोडी गांव रामेश्वरम, तमिलनाडु में मछुआरे परिवार में हुआ था। वे तमिल मुसलमान थे, इनका पूरा नाम डॉ० अबुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम है। इनके पिता का नाम जैनुल्लाब्दीन था। वे एक मध्यम वर्गीय परिवार के थे। इनके पिता अपनी नाव मछुआरों को देकर घर चलाते थे। बालक कलाम को भी अपनी शिक्षा के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा था। वे घर-घर अखबार बाँटते और उन पैसों से अपने स्कूल की फीस भरते थे।

इनकी माता असीम्मा ईश्वर में असीम श्रद्धा रखने वाली थी। अब्दुल कलाम की आरंभिक शिक्षा रामेश्वरम एलिमेंट्री स्कूल से हुई थी। 1950 में कलाम जी ने बी एस सी की पढ़ाई सेंट जोसेफ कॉलेज से पूरी की, इसके बाद 1954-57 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (M I T) से एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया। बचपन में इनका सपना फाइटर पायलेट बनने का था, लेकिन समय के साथ ये सपना बदल गया।

1962 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये, जहाँ उन्होंने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण में अपनी भूमिका निभाई। कलाम जी की अगुवाई में जमीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल, टैंक भेदी मिसाइल पर खूब काम हुआ, पृथ्वी, त्रिशूल, आकाश, नाग आदि मिसाइलों का निर्माण हुआ। 1998 में रूस के साथ मिलकर भारत ने सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल बनाने पर काम शुरु हुआ और ब्राम्होस प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की गई । ब्राम्होस धरती, आसमान और समुद्र कहीं से भी प्रक्षेपित किया जा सकता है, इस सफलता के बाद कलाम को 'मिसाइल मैन' की ख्याति मिली।

1998 में कलाम जी की देखरेख मे पोखरण में दूसरा सफल परमाणु परीक्षण हुआ और भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों में शामिल हुए। डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम को 1981 में भारत सरकार ने पद्म भूषण और फिर 1990 में पद्म विभूषण, इसके बाद 1997 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

27 जुलाई 2016 को भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग में व्याख्यान देते समय दिल का दौरा पड़ने से यह चमकता नक्षत्र सदा-सदा के लिए अंत हो गया।

*संकलनकर्ता :* *अजय सिंह, स0 अ0,*
*प्रा0 वि0 गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

मिशन शिक्षण संवाद

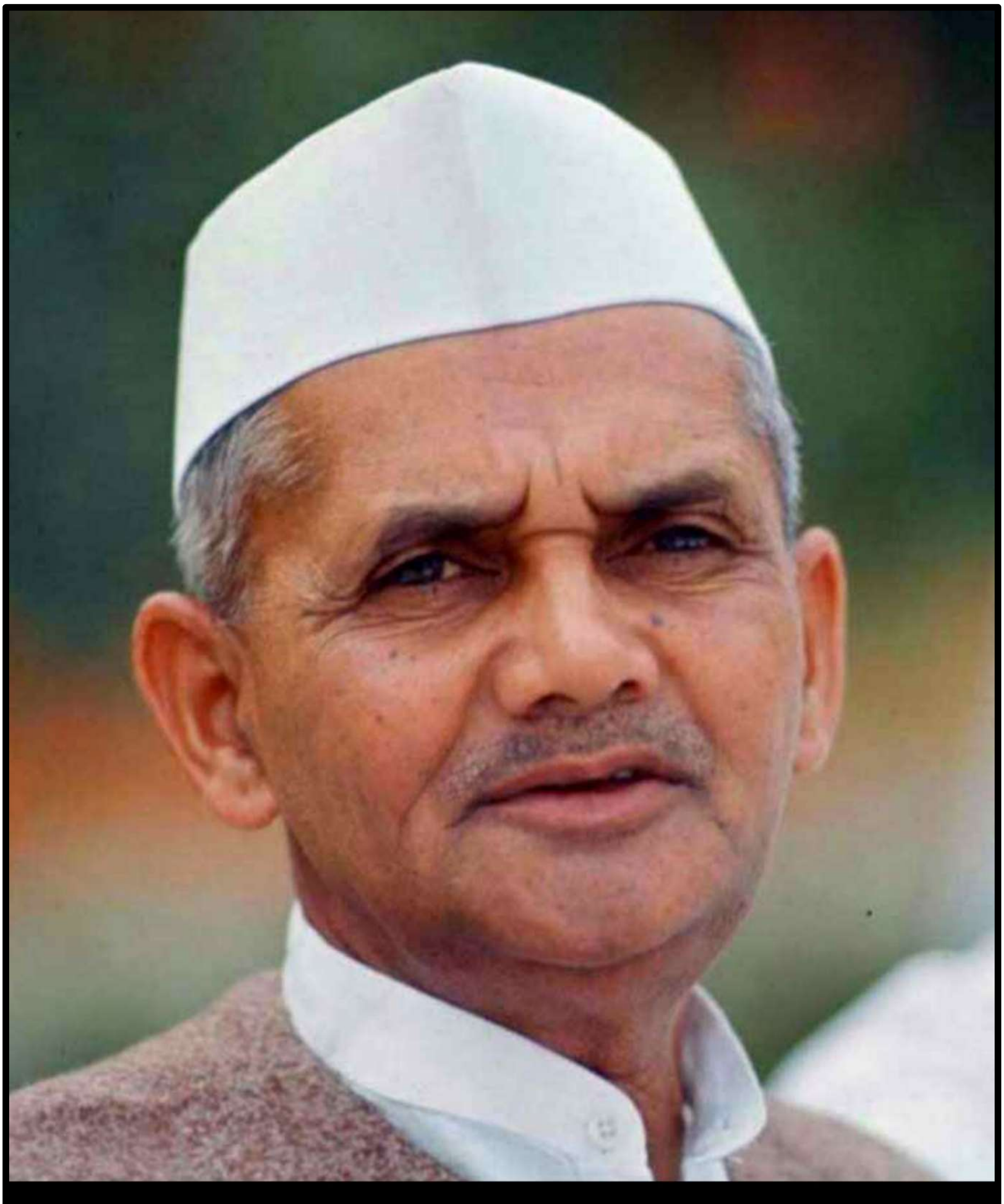

# लाल बहादुर शास्त्री

# लाल बहादुर शास्त्री

**अनमोल कथन-"हम खुद के लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की शांति,विकास और कल्याण में विश्वास रखते हैं।"**

लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी से सात मील दूर एक छोटे से रेलवे टाउन 'मुगल सराय' में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता शारदा प्रसाद श्रीवास्तव एक प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। इनकी माता का नाम 'राम दुलारी'था।

परिवार में सबसे छोटा होने के कारण बालक लाल बहादुर शास्त्री को परिवार वाले प्यार से 'नन्हे' कहकर ही बुलाया करते थे। जब नन्हे 18 महीने के थे, तभी दुर्भाग्य से इनके पिता का निधन हो गया । इसके बाद इनकी माता रामदुलारी अपने पिता हजारीलाल के घर मिर्जापुर चली गयी। ननिहाल में रहते हुए इन्होंने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। इसके बाद की शिक्षा हरिश्चन्द्र हाईस्कूल और काशी विद्यापीठ से हुई।

काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि मिलने के बाद उन्होंने जन्म से चला आ रहा जाति सूचक शब्द श्रीवास्तव हमेशा के लिए हटा दिया और अपने नाम के आगे 'शास्त्री' लगा लिया। 1928 में इनका विवाह मिर्जापुर निवासी गणेश प्रसाद की पुत्री ललिता से हुआ।

मिशन शिक्षण संवाद

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात शास्त्री को उत्तर प्रदेश के संसदीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। गोविंद बल्लभ पंत के मंत्रिमंडल में इन्हें पुलिस एवं परिवहन मंत्रालय सौंपा गया । ये 1951 में नई दिल्ली आ गए और नेहरू जी के निधन के बाद साफ-सुथरी छवि के कारण शास्त्री जी को 1964 में देश का प्रधानमंत्री बनाया गया।

इनके शासनकाल में 1965 में भारत-पाक युद्ध शुरू हो गया इसके तीन वर्ष पूर्व चीन का युद्ध भारत हार चुका था । इस युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी। इसी समय शास्त्री जी ने नारा दिया था- 'जय जवान, जय किसान'।

ताशकंद (रूस) में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्ध समाप्त करने के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद 11 जनवरी 1966 की रात में ही रहस्यमय परिस्थितियों में इनकी मृत्यु हो गयी।

शास्त्री जी की सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिए मरणोपरांत वर्ष 1966 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

*संकलनकर्ता :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*

मिशन शिक्षण संवाद

# मदर टेरेसा

# मदर टेरेसा

**अनमोल वचन-"यदि जीवन दूसरों के लिए नहीं जिया गया तो वह जीवन नहीं है।"**

कहते हैं दुनिया में अपने लिए तो सब जीते हैं लेकिन जो अपने स्वार्थ को पीछे छोड़कर दूसरों के लिए कार्य करता है, वही महान कहलाता है। इन्हें मरने के बाद भी लोग दिल से याद करते हैं, ऐसी ही एक महान हस्ती का नाम है मदर टेरेसा।

मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को स्कॉपजे (अब मेसीडोनिया) में हुआ था । इनके पिता 'निकोला बोयाजू' एक साधारण व्यवसायी थे। मदर टेरेसा का वास्तविक नाम 'एग्नेस गोंझा बोयाजिजू' था। जब यह मात्र 8 साल की थीं, तभी इनके पिता का निधन हो गया जिसके बाद इनके लालन पालन की सारी जिम्मेदारी इनकी माता 'द्राना बोयाजू' के ऊपर आ गयी।

यह एक सुंदर, अध्ययनशील एवं परिश्रमी लड़की थी ।पढ़ाई के साथ गाना इन्हें बहुत पसंद था। ऐसा माना जाता है कि जब यह मात्र 12 वर्ष की थी, तभी इन्हें अनुभव हो गया कि मैं अपना सारा जीवन मानव

मिशन शिक्षण संवाद

सेवा में लगाऊंगी और 18 साल की उम्र में इन्होंने 'सिस्टर्स ऑफ लोरेटो 'में शामिल होने का फैसला किया। फिर आयरलैंड चली गयी, जहाँ इन्होंने अंग्रेजी भाषा सीखी क्योंकि लोरेटो की सिस्टर्स के लिए यह जरूरी था।

1948 में इन्होंने स्वेच्छा से भारतीय नागरिकता ले ली थी ।45 सालों तक गरीब, बीमार, अनाथ और मरते हुए लोगों की मदद की ।मदर टेरेसा ने 'निर्मल हृदय' और 'निर्मला शिशु भवन' के नाम से आश्रम खोला जिनमें ये असाध्य बीमारी से पीड़ित रोगियों व गरीबों की सेवा करती थीं।

1970 तक ये गरीबों और असहायों की सेवा के लिए अपने मानवीय कार्यों के लिए प्रसिद्ध हो गयी। 1962 में इन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1979 में नोबल शांति पुरस्कार और 1980 में भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया गया।

दिल का दौरा पड़ने के कारण 5 सितम्बर 1997 को कलकत्ता में ममतामयी माँ मदर टेरेसा ने आखिरी साँस ली और दुनिया को अलविदा कह दिया।

*<u>संकलनकर्ता</u> :* *अजय सिंह, स० अ०,*
*प्रा० वि० गजोधरपुर, सिधौली, जनपद- सीतापुर (उत्तर प्रदेश)*